हमारे शब्द हमारे रंग

चल देख ले तू भी...

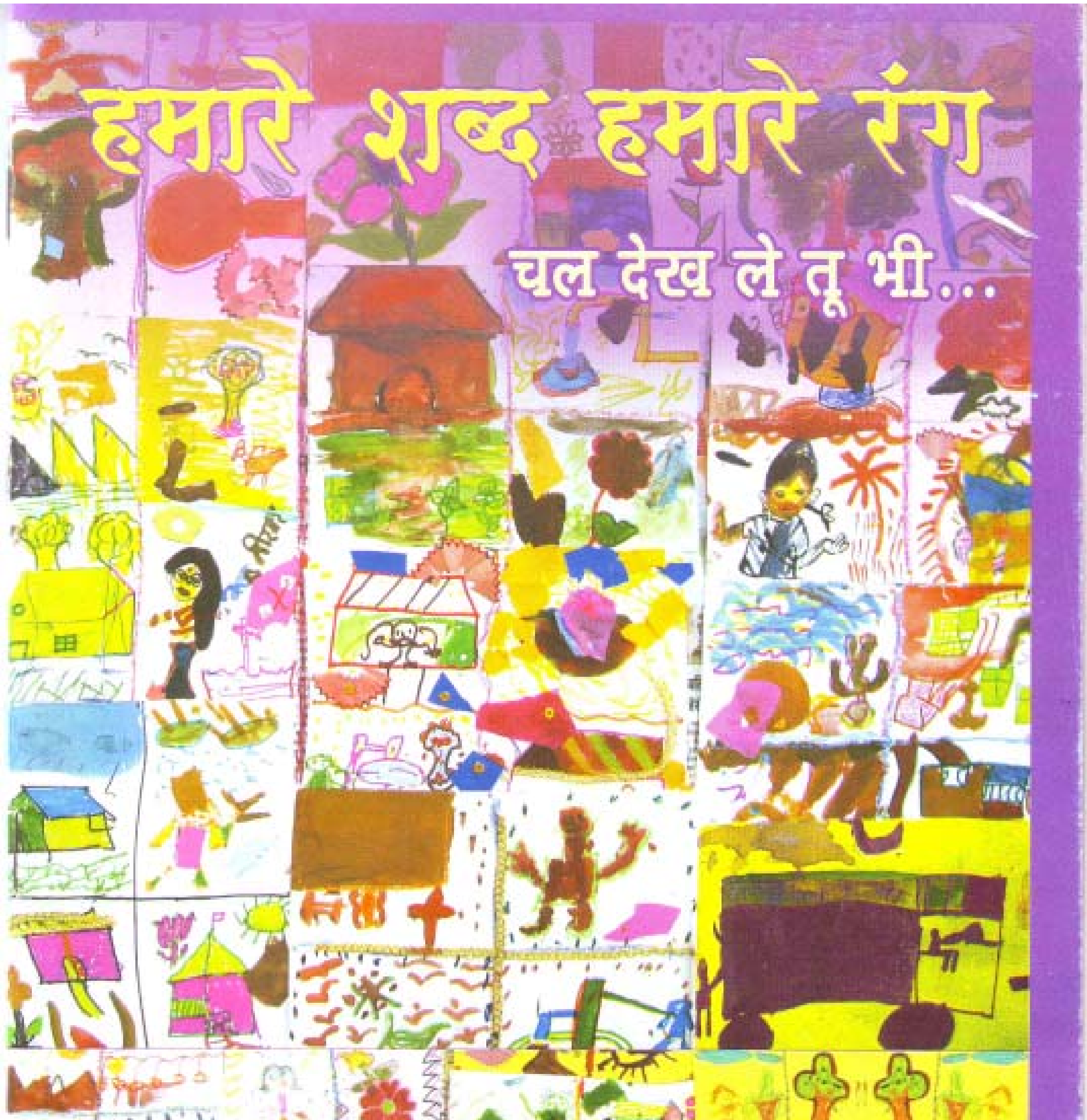

15-16 अप्रैल 2009 के बाल मेले की रचनाएँ

लो फिर आ गया बाल मेला फिर मचेगा धमाल !

'मेला' शब्द अपने आप ही सभी का ध्यान, चाहे वे बच्चे हों या बड़े अपनी ओर खींच लेता है और यदि यह मेला बच्चों का हो तो ये और भी खास हो जाता है। ये बच्चों में अजीब सी हलचल पैदा कर देता है। जहाँ सभी गतिविधियों का केन्द्र बच्चे होते हैं। यहाँ वे सब कुछ जल्दी-जल्दी सीख जाना चाहते हैं। उनकी उत्सुकता और उत्साह का कोई ठिकाना नहीं होता।

बच्चों का एक जगह इकट्ठा होना हमेशा ही सुखद अनुभव होता है। बच्चे इकट्ठे हों और मौज-मस्ती, शोर-शराबा न हो यह तो संभव ही नहीं। यह बाल समूह सामूहिक प्रयास से कौन सा जादुई पिटारा खोल दे, कोई इसका अंदाज़ा नहीं लगा सकता। ये जहाँ होते हैं वहाँ हमेशा कुछ नया होने की संभावना बनी रहती है। वे अपनी लेखनी से कौन सी विशेष रचना रच दें, अपने हाथों के कमाल से कोरे कागज़ पर कौन सा अद्भुत चित्र उकेर दें, अनुपयोगी (फालतू) चीजों से क्या खास चीज़ बना दें, किसी कहानी का क्या नाटकीय अंत कर दें, इसका अनुमान कोई नहीं लगा सकता क्योंकि हर बच्चा अपने आप में अनूठा होता है।

बच्चों की रचनाएं उनके अनुभवों से उभरकर आती हैं, जो उनकी ज़िंदगी से जुड़ी होती हैं। ये अनुभव उन्हें कई बार अन्य बच्चों के समान दिखाते हैं, तो कई बार उन्हें दूसरे बच्चों से अलग खड़ा कर देते हैं। बच्चे किसी भी परिवेश के हों, डर सबको लगता है। 'बच्चा' शब्द ही अपने आप में खास होता है। उसकी अपनी दुनिया होती है। उनके अपने अनुभव होते हैं। बाज़ार के मायने सभी बच्चों के लिए अलग-अलग होते हैं, कोई बच्चा खरीदार होता है तो कोई बच्चा दुकानदार होता है, लेकिन बाज़ार जाना सभी को अच्छा लगता है। कोई बच्चा किसी से कम या ज़्यादा नहीं होता है, चाहे वह प्रायवेट स्कूल का बच्चा हो या बस्ती का। ज़रूरत होती है उन्हें अपने आप को अभिव्यक्त करने के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने की।

15 एवं 16 अप्रैल 2009 को हमने इसी तरह का मंच बच्चों के लिए उपलब्ध कराने का प्रयास किया है, जहाँ बच्चे अपने अनुभव को अभिव्यक्त कर सकें और अपनी दक्षताओं को प्रदर्शित कर सकें।

इस बालमेले में भोपाल शहर की झुग्गी बस्तियों के बच्चे और सरकारी स्कूल और प्रायवेट स्कूलों के करीब 300 बच्चे शामिल हुए। अलग-अलग परिवेश के बच्चों का एक साथ बैठकर विभिन्न गतिविधियाँ करना इस बालमेले का अनूठापन रहा। अलग-अलग जगह से आए बच्चों को अपने अनुभवों को दूसरे बच्चों के साथ बाँटने के खूब सारे मौके मिले।

यह बालमेला इस श्रंखला का चौथा बालमेला है। सारे बच्चों को 8 समूहों में बाँटा, इन समूहों को अलग-अलग रोचक नाम दिए। म्याऊँ-म्याऊँ, भौं-भौं, काँव-काँव, छुक-छुक, पों-पों, टें-टें, टर्र-टर्र, ठक-ठक ये समूहों के नाम थे। ये नाम बच्चों के बीच ठिठोली, मज़ाक के बिन्दू बन गए। एक दूसरे से कहते - ''अरे काँव-काँव समूह के हो तो काँव-काँव ही करोगे।'' अबे भौं-भौं क्यों कर रहा है। हर ग्रुप सभी 8 गतिविधियों में शामिल हुआ। कोई फिल्म देखने में मस्त था, तो कोई मुखौटे बनाने में, कोई पत्तियों से कलाकारी कर रहा था, कोई समूह धरती कैसे बनी इस पर कहानियाँ गढ़ रहे थे, तो कोई कबाड़ से जुगाड़ में जुटा था। सभी समूह मस्ती के साथ-साथ अलग-अलग चीज़ें बनाना सीख भी रहे थे।

इस पूरे मेले के दौरान बच्चों ने जिन-जिन गतिविधियों में भाग लिया और इसके दौरान जो भी सामग्री निकलकर आई, उन्हें इस किताब में हमने छापा है। बच्चों ने बहुत सी चीजें बनाई, बहुत अच्छा लिखा, लेकिन सारी रचनाओं को छाप पाना संभव नहीं था, क्योंकि किताब में इतनी सारी जगह नहीं थी। जिन बच्चों की रचनाएँ नहीं छपी, उन्हें निराश होने की ज़रूरत नहीं। इस किताब में आपकी रचना न भी हो तो क्या हुआ, इसमें आपके दोस्तों की रचनाएं तो मिलेंगी ही और ढेर सारी यादें भी।

बालमेले में से जो रचनाएं निकलती हैं, उन्हें इस किताब के अलावा हमने और भी अलग रूपों में छापा है।

माला, गंगानगर

मैं. . .

मेरा नाम सुमित्रा है। मैं गंगा नगर में रहती हूँ। मैं 10वीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं पढ़ाई के साथ–साथ घर का पूरा काम करती हूँ। मुझे घर वाले स्कूल भेजते हैं। मगर दूसरी लड़कियों को उनके माँ–बाप स्कूल या सेंटर में पढ़ने नहीं भेजते। लड़कियों का मन भी होगा कि काश हम भी स्कूल जाते मगर ऐसा क्यों होता है कि लड़कियाँ ही माँ–बाप पर बोझ बनी रहती हैं और लड़के नहीं। मैं जब भी किसी लड़की को देखती हूँ तो उनकी मम्मी मुझसे कहती है कि पढ़ लिख कर क्या करेगी? कलेक्टर थोड़ी बनोगी। हमारे समाज में लड़कियों की शादी 15–16 साल में हो जाती है। और बाद में बहुत मुश्किलें भी होती हैं जैसे पति का शराब पीना, रोज मार–पीट करना, काम पर नहीं जाना। ये सब लड़कियों को ही क्यों सहना पड़ता है?

मगर मेरे माँ-बाप है जो हम लड़कियों को पढ़ाते-लिखाते हैं। हमारे बस्ती वाले मेरी माँ को बोलते हैं कि तुम अपनी लड़कियों की शादी क्यों नहीं कर रही हो। लड़कियों को पढ़ा-लिखाकर क्या करोगी। मगर मेरी माँ कहती है तुम्हे लड़की बोझ लग रही थी क्या, जो उसकी शादी करवा दी। मेरी माँ तो कहती है कि मैं अपनी लड़कियों को पढ़ाऊँगी-लिखाऊँगी ताकि वह आगे बढ़कर कुछ नाम करें। अगर उसका मन होगा तो शादी करवाऊँगी नहीं तो नहीं।

सुमित्रा, गंगा नगर

रेखा

. . . और मेरा दिन

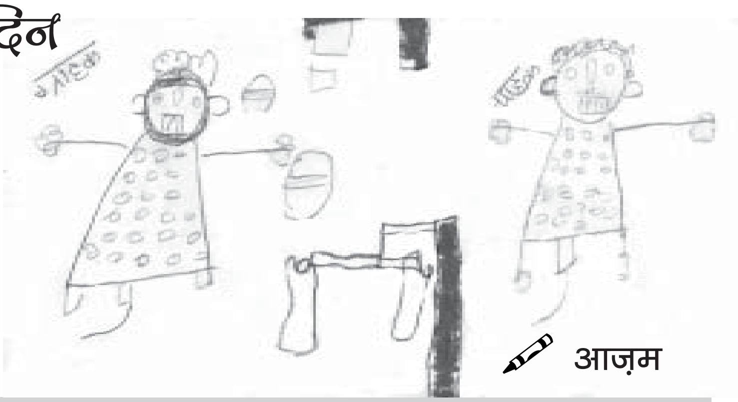

आज़म

मैं चार बजे सुबह उठकर दुकान खोलता हूँ, काँटा लगाता हूँ, माल छांटता हूँ, फिर आठ बजे तक दुकान पर बैठता हूँ। फिर माल लेने जाता हूँ। फिर छांटता हूँ, फिर कबाड़ खाने में बेच आता हूँ। खाना खाता हूँ। 12 बजे तक घूमता रहता हूँ। पैसे से मैं बाजार जाता हूँ। दीदी के साथ जाता हूँ। घूमने मे मजा आता है। माल छांटना अच्छा लगता है। माल जमा करने के लिए अच्छा नही लगता है। जब लोग सामान उठाने बुलाते हैं, तो अच्छे से बात नहीं करते, तब झगड़ा हो जाता है, तब बुरा लगता है। दिन भर से जब थक जाते हैं तो बैठ कर गाने सुनते हैं। खाना खा कर सो जाता हूँ। माल छांटने मे भी बहुत मेहनत लगती है और उसमें हाथ–पैर दुखने लगते हैं। पर कमाई भी है।

पढ़ना तो अच्छा लगता है पर पता नहीं क्यों मन नहीं लगता। स्कूल गया था, किसी और लड़के ने चोरी की थी। मैडम ने मेरा नाम लगा दिया। मेरा झगड़ा हो गया।

मुझ पर झूठा इल्जाम क्यों लगाया? मैं माल छांटता हूँ पर चोरी नहीं करता। तब से स्कूल नहीं गया।

आज़म, सरगम

इसरार

आज मैं सुबह उठी। सबसे पहले मैंने दोनों हाथ जोड़कर ईश्वर को प्रणाम किया और धरती माँ को प्रणाम किया और अपने बिस्तर उठाकर फ्रेश हुए और उसके बाद मैंने अपनी छोटी बहनों को नहलाया और उसके कपड़े धोए और उसके बाद मैंने अपनी पानी की बाल्टी भरी और फिर मैंने नहाया। और मैंने चाय पी कर अपना काम करा। फिर तैयार होकर दोनों चले गए। और भगवान की पूजा की और हम स्कूल में बैग उठाकर मैम और आंटी से नमस्ते करके आ गए। हम स्कूल में गए और दो मिनिट तक बैठे थे और मैम ने रोज की तरह हाजरी की। उसके बाद मैम अपने काम करी हमने अपने मन से एक पन्ना निकाल कर हिन्दी और अंग्रजी की। उसके बाद मैम को चैक कराई मैम ने हमें वेरी गुड दिया। उसके बाद मैंने हिन्दी की किताब निकाली थी और हमने एक पन्ना पल्टा थी। उसके बाद एक लड़की मुझे बुलाने आई थी और बोली कि कीर्ति तुम्हें सर बुला रहे है। हम बैग बांध कर सर से पूछकर चले गये। उसके बाद हम काम ही काम करते रहे और हमने खाना खाया।

कीर्ति मालवीय, दीपशिखा

प्रभा

सुबह उठकर मुँह धोती फिर चाय पीती। फिर बर्तन माँजती हूँ। झाड़ू लगाती हूँ। पानी भरती हूँ। फिर मुस्कान जाने के लिये तैयार होती हूँ। पढ़ाई करके घर जाती हूँ। रोज-रोज पढ़ने नही जा पाती। मम्मी बीनने जाती है। मैं छोटे भाई को संभालती हूँ। मम्मी पैसे देकर जाती है। जब वो रोता है तो दूध गरम करके पिला देती हूँ। कभी-कभी वो बहुत रोता है। रोते-रोते सो जाता है। चुप नहीं होता तो बहुत गुस्सा आता है। मम्मी पाँच बजे लौट्ती है।

आरती, सरगम

कल मैं अपनी सहेली के साथ पत्ते खेली। मैंने पत्ते पैसे से खेले हम चार सहेली खेल रही थी। मैंने दस रुपये उनसे जीते। मैंने दस रुपये का नहाने का साबुन और कपड़े धोने का साबुन खरीदा। और मैंने साबुन से कपड़े धोये और घर का काम भी किया।

टीना

दीपा

आज जब मैं सुबह उठी तो मुझे याद आया कि मैंने होमवर्क तो किया नहीं। स्कूल पहुँची तो मुझे टीचर ने डाँटा ओर सजा दी कि पूरे ब्रेक मैं खड़ी रहना और खड़े-खड़े ही होमवर्क करो। कल करके लाना। अब मैं रोज होमवर्क करके ले जाती हूँ। अब मैं घर जाकर खाना खाती हूँ और सो कर जब उठती हूँ तो होमवर्क करती हूँ।

प्रियंका जोशी

मैं बाणगंगा में रहता हूँ। मैं रोज तलाब पर नहाने जाता हूँ। एक गिलहरी पेड़ पर घर बना रही है। मैं चंगे-अस्टे खेलता हूँ। मैं रोज शाम को घर पर पढ़ाई करता हूँ। मैं रोज आम खाता हूँ। मैं सामान लेने 8 दुकान जाता हूँ। चावल-दाल लाता हूँ।

वीरेन्द्र, दीपशिखा

मैं सुबह उठकर खेलने जाता हूँ। कोई काम वाला बुलाने आता है तो काम करने चला जाता हूँ। कभी घास काटने जाता हूँ। कभी–कभी पेड़ काटने जाता हूँ। बड़े पेड़ के 250–300 रुपये लेता हूँ। कुछ पैसे माँ को देता हूँ। कुछ खुद खर्च करता हूँ।

बिट्टू

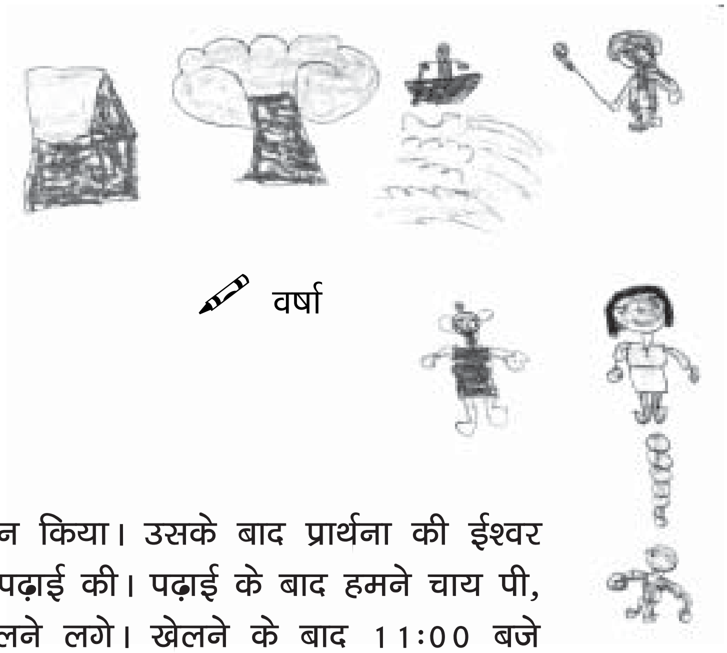

वर्षा

कल मैंने सुबह उठकर स्नान किया। उसके बाद प्रार्थना की ईश्वर का ध्यान किया फिर हमने पढ़ाई की। पढ़ाई के बाद हमने चाय पी, नाश्ता किया। फिर हम खेलने लगे। खेलने के बाद 11:00 बजे हम स्कूल के लिए तैयार हो गये। हमने भोजन करने से पहले भोजन मंत्र किया और भोजन करके स्कूल चले गये। स्कूल में हमने बहुत अच्छी–अच्छी बातें सीखी और घर में सभी को बताईं। सभी बहुत खुश हुए। मैं बहुत पढ़ना चाहती हूँ।

दीपाली

भावना

ये किताब हम सब कि है...

काँव–काँव

म्याऊँ–म्याऊँ

छुक–छुक

भौं–भौं

टर्र–टर्र

ठक–ठक

पौं–पौं

टैं–टैं

दुनिया कैसे बनी

दुनिया एक ऐसी चीज़ है जिसमें अनेक चीज़ होती हैं। कहते हैं कि दुनिया भगवान ने बनाई है लेकिन क्यों बनाई? यह कोई नहीं जानता है। दुनिया में सुख है, दुख है, तड़प है। हमारी दुनिया का नाम पृथ्वी है। ऐसा नाम क्यों रखा गया है, कोई नहीं जानता। क्योंकि इस बारे में न किसी ने चर्चा की, न बातें। हमारी दुनिया में जो जीवन है, वह पेड़-पौधों के कारण है। दुनिया में पहले जमीन, पेड़, जीव-जन्तु, मनुष्य, आग, पानी, जंगल आदि बने।

✍ प्रांजल नेताम

✍ प्रांजल नेताम

पहले पृथ्वी एक बंजर जमीन की तरह थी। वहां के जानवर प्यास के मारे मर जाते थे। उन्होंने एक योजना बनाई कि हम सब परिश्रम करके यहां पानी उत्पन्न करेंगे। हाथियों के झुण्ड लकड़ियों को ढूंढने में लग गए। दूर कहीं जाकर उन्हें लकड़ियों के सूखे डण्ठल मिले। हाथी उन्हें अपनी सूंड में फंसाकर जमीन में मारने लगे। कई दिनों तक कठोर परिश्रम करने के बाद पानी उत्पन्न हुआ। सभी जानवर ने अपनी प्यास बुझाई। बाद में जगह-जगह तालाब बना दिए गए।

एक दिन बंदर घूम रहा था तभी उसे एक गोल-गोल अण्डा मिला। उसने सोचा कि इसे मैं तालाब के किनारे गढ़ा दूं। कुछ दिनों बाद वहां एक वृक्ष उगा। वहां वृक्ष के नीचे फल गिरे हुए थे। तो जानवर उसे खा गए और उसके अंदर का कठोर भाग फेंक दिया। इससे कई वृक्ष उगे। फिर बाद में जानवर का रूप मनुष्य में परिवर्तित हुआ और मनुष्य पैदा हुए।

✍ आयुष तिवारी, दीपशिखा

✐ चंचो

जब दुनिया नहीं बनी थी तब पूरी जगह सूखा और खाली पड़ा था। पेड-पौधे पहले से ही थे। धीरे-ध ीरे पानी आना शुरु किया। फिर उसके बाद जीव-जन्तु ने धरती पर पैर रखे। उसके बाद एक बंदर से धीरे-धीरे मनुष्य का रूप होने लगा। पहले वो लोग नहीं जानते थे कि घर क्या होता है, कपड़े क्या होता है, खाना क्या होता है, उन्हें कुछ भी नहीं मालूम था। धीर-धीरे वे कच्चे फल-फूल खाने लगे। नंगे घूमते थे। इधर से उधर भटकते रहते थे। फिर धीरे-धीरे जानवरों की खालों से अपना तन ढकने लगे। पहले तो उनका घर नहीं था। वे लोग गुफाओं में रहते थे। फिर उसके साथ ऐसे कई परिवर्तन आए। पहले वो लोग आग जलाना नहीं जानते थे, खेती करना नहीं जानते थे। फिर धीरे ध ीरे सबकी खोज करने लगे। उसके बाद वह पूरी तरह से इंसान में बदल गया। इस जमीन में पेड़-पौधे आए, फिर जानवर आए, जानवर के बाद मनुष्य आए। वह घर बनाता, कम्प्यूटर बनाता, मशीन बनाता आदि सब चीजें मनुष्य ने बनाई है। हवा, पानी, पेड़.पौधे, सूर्य ये सब चीज़ें हमें प्रकृति ने दी है। इसे मनुष्य ने नहीं बनाया। पहले के जमाने में लोग धरती पर ही अपना जीवन गुजारते थे तब घर नहीं था। वे लोग दूर-दूर से पैदल चलकर यात्रा करते थे। तब गाड़ी, मोटर, बस नहीं थे। पहले तो खाने में भी कुछ नहीं था, वे लोग फल-फूल और पानी पीकर अपनी भूख मिटाते थे।

✐ चंदा, गंगा नगर

✐ रितिक

भगवान ने सारी दुनिया बनाई है, जैसे – इंसान, पानी, पेड़। पहले पत्ते के कपड़े पहनते थे अब तो बहुत तरह के कपड़े चल गए हैं।

अगर मैं भगवान बनती तो मैं सारे संसार को देखती और कौन दुखी-बीमार है, कोई के घर चूल्हा नहीं जलता और लड़ाई-झगड़े होते हैं। मैं भगवान होती तो सारी परेशानी हल कर देती। किसी के माता–पिता शराब पीते हैं और बच्चों को मारते और कहते हैं पैसे मांगकर मैं शराब पिऊँगा। मैं तो ऐसे लोग को सूली पर चढ़ा दूंगी। फिर उनको दूसरा जन्म नहीं लेने दूंगी।

क्यों बच्चों पर जुल्म–अत्याचार करते हैं, क्या आपके मां-बाप ऐसा ही व्यवहार करते थे, मैं उनसे यह सवाल पूछूंगी।

काजल

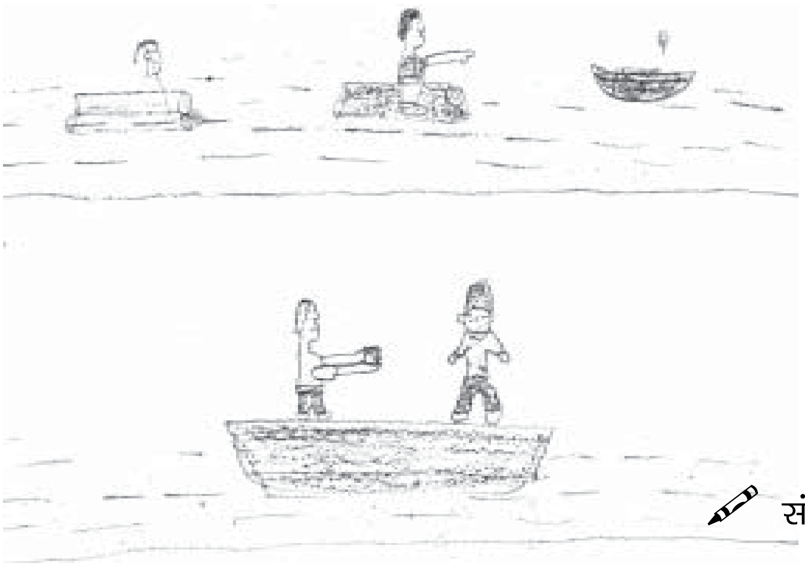

संदीप

बहुत दिन पहले सभी जगह पानी–पानी था। तब लोग एक लकड़ी के ऊपर बैठकर जमीन के तालाब में इधर-उधर घूम रहे थे। तभी उन्हें दूर से एक नाव दिखाई दिया। वह उस नाव के पास गए। नाव के ऊपर उन्हें भगवान दिखाई दिए। उन्होंने भगवान से कहा जमीन खोजने में आप हमारी मद्द करो। भगवान ने उन्हें एक डिब्बा दिया। उन्होंने बोला – ये डिब्बा एक सूखी जगह पर खोलना तो तुम्हें एक नई दुनिया दिखाई देगी।

संदीप नेताम, दीपशिखा

सूरज ही सूरज था हर जगह पर। आस-पास उसके कुछ भी नहीं था। पानी नहीं था और पेड़ नहीं था। बेचारा बुद्धा अकेला तड़प रहा था। फिर उसने आसमान को देखा। फिर उसे आसमान से कुछ नीचे गिरते हुए दिखाई दिया। फिर उसने उसको देखा और उसके पास गया। फिर उसने सोचा कि यह क्या है? क्या यह खाने की है? इसको खाऊँ या न खाऊँ?

फिर बाद में खाया। जैसे खाया आदमी, औरत, पेड़, बच्चे, पौधे, पानी, शेर सब चीज़ निकल गई। अब बुद्धा को अच्छा लगा और खुश हो गया। जैसे वो चलता था सब बड़े होते गए। पानी की बरसात होने लगी। और वो खुश हो गया। फिर आगे गया तो उसे एक लड़का मिला। लड़का ने उससे पूछा – बाबा, तुम कौन हो?

''मैं यहीं का रहने वाला हूँ। मुझे ऊपर से एक फल मिला। जैसे ही मैंने उसको खाया, सब दुनिया बदल गई।''

वहां बुद्धा को एक घर दिखाई दी। फिर बुद्धा घर के अंदर गया। अंदर पानी पिया।

मोना

कुबलू

सबसे पहले जमीन नहीं थी और लोग सूरज में रहते थे। लोग अपने भगवान से प्रार्थना करते थे और पूजा करते थे। भगवान से कहते, आप रक्षा करो। सूरज में ही कपड़े सिलते थे और वहां कपड़े मिलते थे।

छोटा रितिक

पहले दुनिया में पानी होगा फिर पानी में छोटा सा जानवर होगा। एक छोटा सा बीज होगा। उस बीज से एक पौधा बना होगा। पौधे से पेड़ से फल उगे फिर पानी का जीव उस फल को खाया होगा। उस जीव से और जीव पैदा हुए। उस जीव से फिर इंसान आया होगा। इंसान से और इंसान पैदा होते गए। इंसान ने फिर अपने तरीके से जीवन जीना सीखा फिर उसने अपनी दुनिया बनाई। उसके एक छोटी सी दुनिया में एक घर, पेड़, उसका परिवार हर चीज़ होगा। उसने उसे ही अपनी दुनिया समझी फिर इंसान जब इधर–उधर घूमने लगा तो उसे एक भगवान मिला। तो वो समझने लगा कि दुनिया को भगवान ने बनाया फिर वो किसी पत्थर के टुकड़े में अपना भगवान बनाकर पूजा करने लगा फिर धीरे–धीरे भगवान किसी के शरीर में आने लगा। वो सोचने लगा कि भगवान ही हमारे दुखों को दूर करता है। फिर उसने अपना एक पहचान बना लिया कि ये भगवान हमारी जाति की पहचान है। फिर उसने एक मंदिर बनाकर उसमें अपने भगवान को बसाया और सब लोग मानने लगे कि हमारा भगवान है और वे सब उस भगवान की पूजा करने लगे।

अन्नू

आज मैं कुछ भी करूँ भगवान का मन होता है। वो जो करना चाहता, वो करता है। पर उसको देखने वाला कोई नही था, क्योंकि वो अकेला था। उसने सोचा कि कौन भगवान को याद करेगा इसलिए इंसान बना दिया।

अर्चना, गौतम नगर

हमारी पृथ्वी एक जलता हुआ आग का गोला थी। धीरे-धीरे विकास होता गया और हमारी पृथ्वी एक जीवित ग्रह बन गई। तो कुत्तों ने सोचा कि अब हमें रोटी कौन देगा तो उन्होंने शंकरजी से कहा कि– महादेव हमें रोटी देने के लिए इंसान की जरूरत है, तो शंकर जी ने आदिमानव पहुँचाये। तो पहले आदिमानव बंदर थे और पेड़ों पर रहते थे। धीरे-धीरे उन्होंने जानवरों को मारकर खाना शुरू किया और जानवरों से बचने के लिए गुफाओं का इस्तेमाल किया। फिर उन्होंने देखा कि आग मे एक चिड़िया गिरी है। उन्होंने उसे उठाया और खाया तो वह बहुत स्वादिष्ट लगा फिर वह माँस पकाकर खाने लगा। फिर उसने पेड़ पर बहुत सारे फल देखे तो फिर वह उसे तोड़ने के लिए उठा। उसका पूरा शरीर बनाया वहां से उसने फल तोड़ा और पूरा इंसान बना।

प्रीति

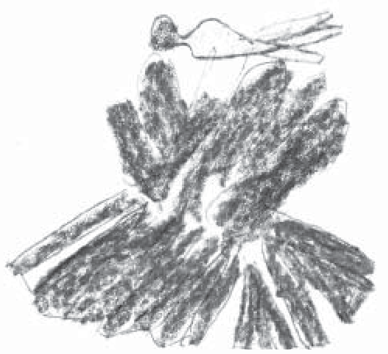

सबसे पहले जमीन नहीं थी। लोग सुरंग में रहते थे। लोग अपने भगवान से प्रार्थना करने लगे और भगवान की पूजा करने लगे। फिर भगवान से कहने लगे भगवान आप हमारी रक्षा करो। भगवान हम इस सुरंग में नहीं रह सकते हैं। आप अपने भक्तों के लिए जमीन ढूंढ लाओ। भगवान कहने लगे तुम हमारी पूजा करना फिर तुम्हे एक कली मिल जाएगी। फिर जब कली खिल जाएगी तो धरती बन जाएगी। लोग भगवान की पूजा करने लगे। फिर उनको एक कली मिलती है और कली दो साल बाद खिल जाती है और धरती बन जाती है।

सभी चित्र प्रिती

अक्षय

समूह में हर बच्चा अपना.अपना कार्ड लिए होते हैं। कार्ड पर चार बिन्दु पहले से ही ल
को मिलाने के बाद एक कोने से सभी लोग ड्रॉइंग बनाना □ुरु करते हैं। पांच मिनट

□ुरु.शुरु में कार्ड बदलने पर बच्चे चिड.चिड़ करते हैं – . . . ये क्या बना दिया दीदी

एक काम

धीरे.धीरे जब सबको ये बात समझ में आती है कि इन बहुत सारे कार्डों से मिलकर ए
चित्र और अच्छा बनाने की सलाह देते हैं। जैसे ही एक बच्चा अपने कार्ड पर कुछ बना
दे। इसमें बच्चे मेरा.तेरा कार्ड नहीं करते हैं बल्कि यह कोशिश करते हैं कि कार्ड को

बाल मेले में हमने क्रेऑन, पेंट्स के साथ कतरन, पेंसिल के छिलके, कपड़े के टुकड़े

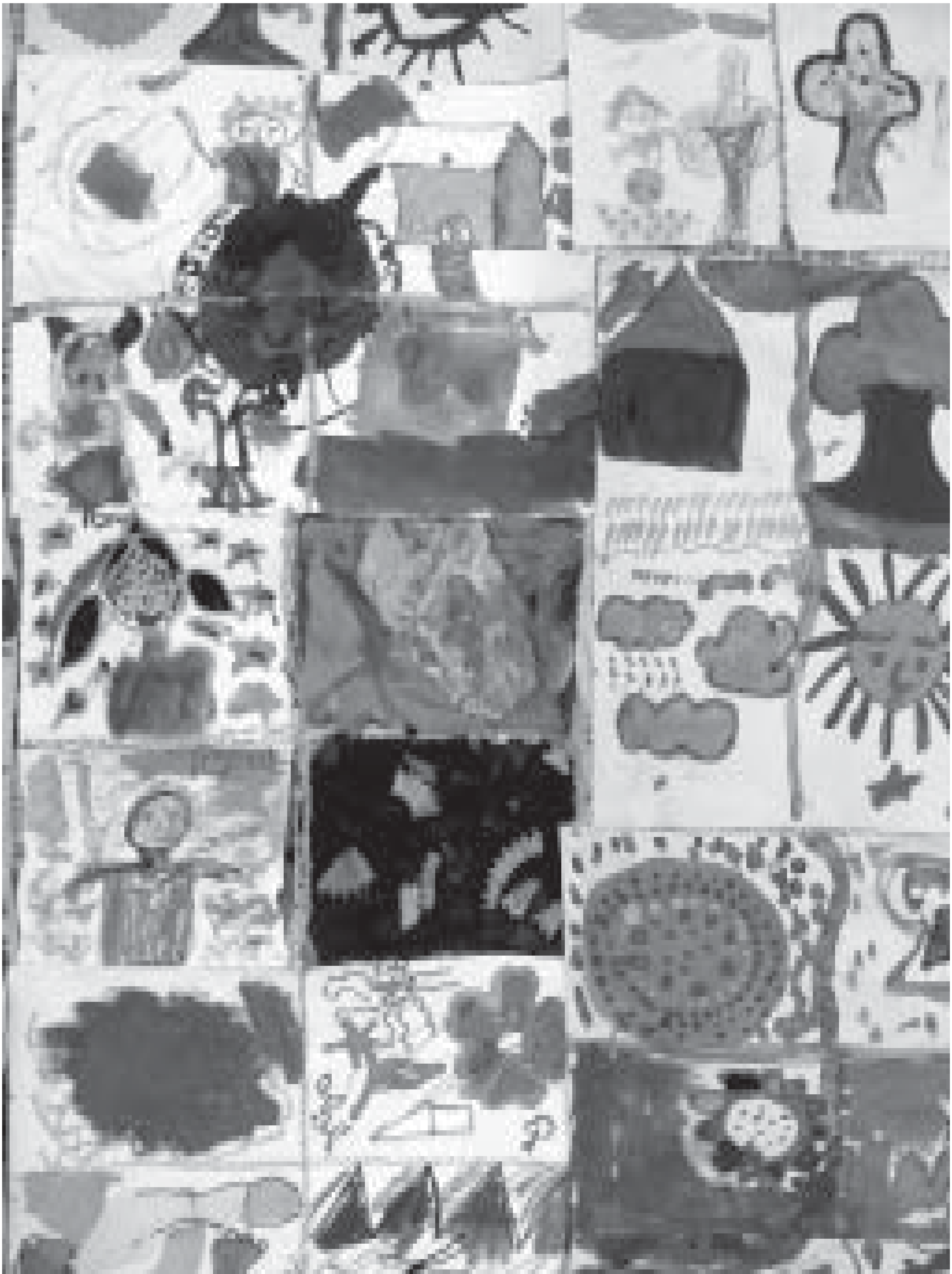

हवा के दम पर ......
विज्ञान के प्रयोग

बच्चों को जितने भी प्रयोग करवाए थे सभी हवा पर आधारित थे। कुछ बच्चों को पता था कि किस प्रयोग से क्या होगा और ऐसा क्यों हो रहा है। क्योंकि वे दूसरे कमरे से आकर खिड़की से देख रहे थे और बच्चों से की जाने वाली बातें सुन रहे थे। हवा से बुलबुले बनने वाले प्रयोग में कुछ बच्चों को लग रहा था कि जादू हो रहा है। लेकिन कुछ तो समझ गए कि यह क्यों हो रहा है। गिलास पर पानी और हवा के कारण जब कागज़ गिलास पर चिपक गया तो दीपक ने कहा इसमें गोंद लगाया है क्या? फिर हमने उसे प्रयोग करने के लिए दिया। उससे वह प्रयोग आसानी से हो गया बारी-बारी से सब बच्चें यह प्रयोग करना चाह रहे थे।

जब स्ट्रा से सीटी बना रहे थे तो बच्चों से सीटी बज गई थी लेकिन जब मेडम की इच्छा सीटी बजाने की हुई तो मैडम ने बच्चे से स्ट्रा ली और उसे कैची से काटकर बजाने लगी तो उनसे सीटी नहीं बजी मैडम और बच्चे सभी हंस पड़े। जब हम एक प्रयोग कर रहे थे तो प्रयोग के बाद बच्चों के भी कई प्रश्न आए, कि यदि हम प्रयोग मे कुछ फेरबदल कर दे तो क्या बदलाव आता है या फिर वही स्थिति रहती है।

अगला प्रयोग - हवा की मदद से पानी नली के द्वारा ऊपर चढ़ाकर पानी का फव्वारा बनाना था। सब बच्चे स्ट्रा के दो टुकड़े करके एक हिस्से को पानी में डालकर दूसरी नली से फूंक मार कर पानी ऊपर चढ़ा रहे थे। बहुत से बच्चे शुरु में नहीं कर पा रहे थे लेकिन कुछ बच्चों ने पहली बार में कर दिखाया।

उनको देखकर बाकी बच्चे ज़्यादा प्रयास करने लगे। एक लड़की ने अपने पास बैठी लड़की को फव्वारे से पूरा गीला कर दिया। खूब कोशिश करने के बाद बच्चों से पूछा कि पानी कैसे ऊपर चढ़ रहा है तो एक बच्चा बोला हवा की मदद से। मगर हवा तो नली के दूसरे छेद से निकलकर जा रही है। इसी को ध्यान से देखो। हवा नली से होकर पानी में डूबी नली से टकराकर पानी तक पहुँच रही है और उसी नली से फिर ऊपर चढ़ रही है। साथ में पानी को लेकर आ रही है लेकिन हवा लगातार चलने से पानी जब ऊपर आता है तो फव्वारा बन जाता है।

आखरी प्रयोग काँच की बोतल में काँच की दो नलियाँ डाल कर उस बोतल में पानी भर दिया। दोनों नलियों में से एक नली को थोड़ा ऊपर रखा और उस बोतल मे पानी भर दिया और बच्चों से पूछा कि बताओ अगर इस बोतल को उल्टा करते है तो क्या होगा? सभी बच्चे बोले दोनों नलियों से पानी आएगा। लेकिन जब बोतल को उल्टा किया तो एक नली से पानी आया और दूसरी नली से हवा जाती हुई दिख रही थी। फिर एक बच्चा बोला भैया ये दोनों नली को बराबर कर दो तो दोनों नली से पानी आने लगेगा। दोनों को बराबर किया किंतु पानी एक नली से ही आ रहा था। बच्चों को समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों हुआ। दीदी ने बताया कि हमारे चारों ओर हवा रहती है। जिसके कारण एक नली से तो हवा अंदर जा रही है और दूसरी नली से हवा पानी को लेकर बाहर निकल रही है, लेकिन जब हवा जाने का रास्ता बंद हो जाता है तो बोतल में स्थित हवा बनी रहती है। उससे निकलने का रास्ता नहीं मिलता इस कारण पानी बोतल के बाहर नहीं आता।

बाज़ार का दिन

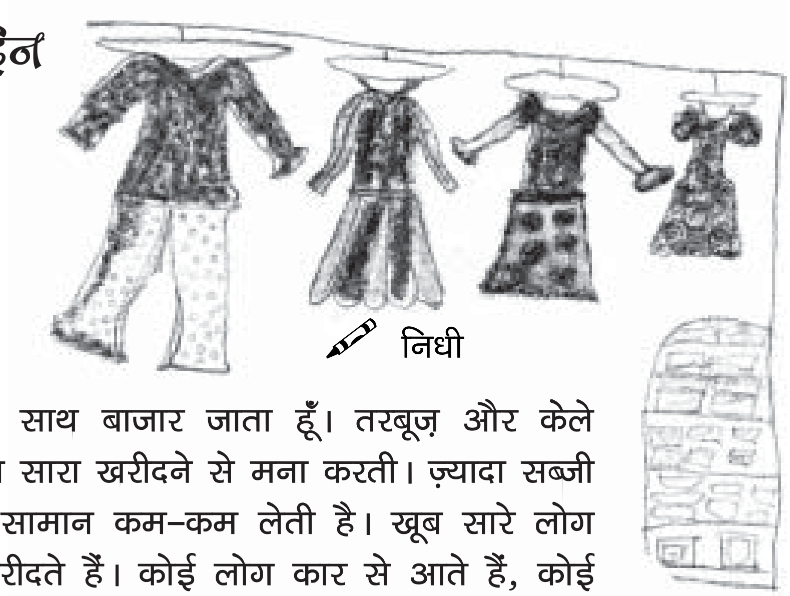

निधी

हर संडे को मम्मी के साथ बाजार जाता हूँ। तरबूज़ और केले खरीदता हूँ। मम्मी बहुत सारा खरीदने से मना करती। ज़्यादा सब्जी खरीदती है। खाने का सामान कम-कम लेती है। खूब सारे लोग आते हैं। सब सब्जी खरीदते हैं। कोई लोग कार से आते हैं, कोई लोग पैदल आते हैं। मैं साईकिल पर बैठकर जाता हूँ। मुझे साईकिल पे बैठना अच्छा नहीं लगता। पर मेरे पापा के पास गाड़ी नहीं है।

अर्जुन, दीपशिखा

हम बाजार हमारी मम्मी और बुआ के साथ जाते हैं। हमारे भईया गाड़ी पर बुआ, मम्मी और मेरे को भी ले जाते हैं। हम बाजार में सब्जी खरीदते हैं। आलू, भिंडी, मैथी, पालक, टमाटर, हरी मिर्च। फिर हम कपड़े खरीदने जाते हैं। हम कपड़ो में मम्मी, बुआ के लिए साड़ी खरीदते है। मेरे और भइया के लिए पेंट-शर्ट खरीदते हैं। मेरे घर पर दुकान है। तो दुकान का भी सामान खरीदते हैं, जैसे - नमकीन के पैकेट, बिस्किट, तोश, चाकलेट आदि। हमारी मम्मी हमको खाने की चीज समोसे, जलेबी भी दिलाती है। फल में हमको केले, सेब, पपीता भी दिलाये थे और मैं, मेरी मम्मी, बुआ भैया की गाड़ी में बैठकर घर चले आते हैं।

आरती, दीपशिखा

बुलबुल

सोनू

हमारा बाजार रविवार को लगता है और हमारे घर मे मम्मी एवं नानी और हम जाते है और बाजार से लोकी, बैगन, गोभी, पालक, मैथी मिलती है। हम लोग जब बाजार जाते है तो साफ होकर जाते है और कभी–कभी घर मे सब्जी खत्म हो जाती है तो हम लोग मण्डी से लेकर आते है। मगर हमारे घर में 12 लोग रहते है और हमारे घर मे तो लोग आते–जाते है और वो भी कितने दिन के लिए पाँच से बीस दिन। मगर हमारी मा खाना कम खाती है

बुलबुल, दीपशिखा

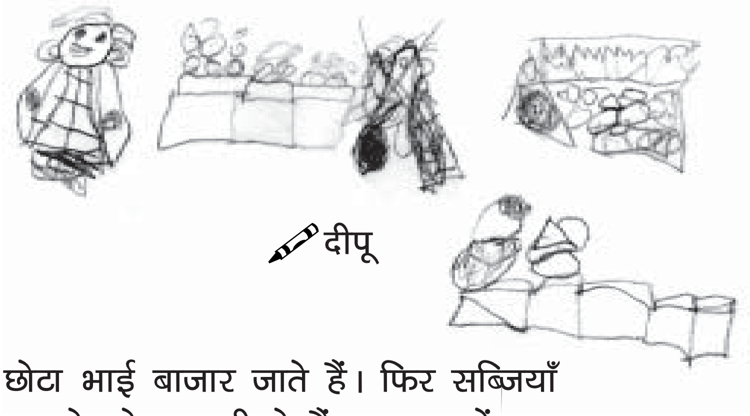

दीपू

मैं, मेरी मम्मी और मेरा छोटा भाई बाजार जाते हैं। फिर सब्जियाँ खरीदते हैं। गोस्त की दुकान से गोस्त खरीदते हैं। बाजार में हम समोसे खाते हैं। भाइयों के लिए समोसे और जलेबी खरीदते हैं। दो रूपये की दाल खरीदते हैं। बाजार में हम समोसे खाते हैं। बाजार जाने के लिए रेल पटरी पार करना पड़ता है। पैदल–पैदल जाते हैं। सुबह से मेरा भाई और मैं झगड़ा करते हैं बाजार जाने के लिए। फिर मम्मी मुझे लेकर जाती है। बाजार में मुझे बहुत अच्छा लगता है। खूब तैयार होकर बाजार जाती हूँ।

दीपू, दीपशिखा

मीना की कहानी

फिल्म

मीना अपने छोटे भाई के साथ स्कूल जाना चाहती है। पापा मम्मी कहते हैं कि घर का काम कौन करेगा। मीना का मिट्ठू स्कूल जाता है और वहाँ से दो का पहाड़ा सीखता है और मीना को सिखाता है। मीना अपनी मुर्गियों की गिनती करती है तो एक मुर्गी कम होती है। मीना मुर्गी को ढूंढती है। मुर्गी को एक चोर पकड़ ले गया होता है। सारे गाँव वाले उस चोर को पकड़ लेते है और मीना की तारीफ करते हैं। ओर उसे स्कूल भेजने की बात करते हैं।

मीना एक पका हुआ आम तोड़कर माँ के पास घर लाती है। माँ आम के दो टुकड़े कर छोटा टुकड़ा मीना को देती है। हमेशा की तरह बड़ा टुकड़ा राजू को मिलता है। रात को भी राजू को मीना से ज़्यादा खाना मिलता है। मीना जानना चाहती है कि ऐसा क्यों होता है। घर के लोग आपस में बात करते हैं कि दोनों बच्चों में से कौन अधिक काम करता है। मीना और राजू एक दिन अपना–अपना काम बदल लेते हैं। तब राजू को महसूस होता है कि मीना का काम कितना थका देता है।

मीना के परिवार को पैसों की ज़रूरत है। अब मीना की माँ को घर से बाहर जाकर काम करना पड़ेगा। छोटी बहन रानी की देखभाल करने के लिए मीना को स्कूल छोड़ना पड़ेगा। मीना को स्कूल जाना बहुत पसंद है। स्कूल छोड़ने की बात सोचकर वह दुखी हो जाती

है। इसी बीच में बनिये से पैसे उधार लेते हैं। बनिया 800 की जगह पर 1800 पर अंगूठा लगवाता है। तभी मीना देख लेती है और अपने बापू को बताती है, ऐ बापू 800 नहीं, 1800 पर अंगूठा लगवा रहा हैं।

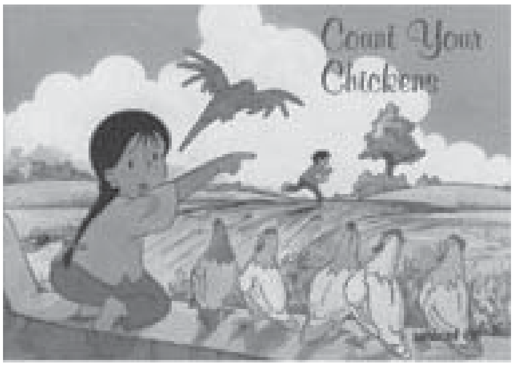

मीना के गाँव में कुछ परेशानी आ जाती है। मीना के परिवार के पास ना खाने को कुछ बचता है ना पैसे। मीना के पापा पैसा कमाने के लिये शहर जाने का फैसला करते हैं। वह मीना, राजू और मिट्ठू को अपने साथ ले जाते हैं। शहर में गुज़ारा करने के लिए सबको काम करना पड़ता है। मीना को भी एक जगह काम करना पड़ता है। वो बहुत परेशान होती है और रोती है। उसको गाँव के लोगों की याद आती है। शहर में सब घरों में मीना जैसे बच्चे काम करते हैं। सबके साथ बुरा व्यवहार होता था। एक दिन, मीना की बुआ शहर आती है। और मीना का हाल देखकर मीना के पापा से सबको घर वापस ले आने की बात करती है।

खुद बनाएं खिलौने

कबाड़ से जुगाड़

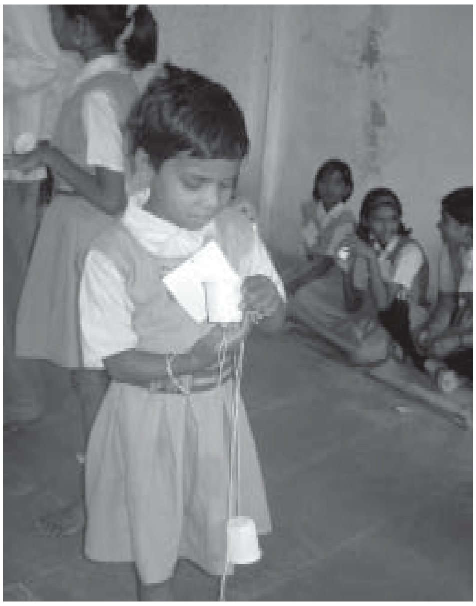

रास्ते में जाते हुये, घर के बाहर, घर के अंदर जो चीज़ें काम की न हों, उससे कुछ बना सकते हैं। पुराने फेंके हुए प्लास्टिक या कागज़ के गिलास, पुराने गत्ते के टुकड़े, पुरानी कापियों के कवर, धागे, डोरी इत्यादि से कई मजेदार चीज़ें बन सकती हैं।

टेलीफोन

ट्रिन. . .ट्रिन. . .हैलो! कौन बोल रहा है? मैं बोल रही हूँ। अरे कमाल है, इधर भी मैं ही बोल रही हूँ।

आजकल जिसके पास देखो उसी के पास मोबाइल फोन है। फिर भला मोबाइल फोन की इस दौड़ में बच्चे क्यों पीछे रहें। परन्तु मोबाइल को खरीदने के लिए पैसा चाहिए जोकि अभी नहीं है। पर कहते हैं न ''आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है''। फिर क्या था, थोड़ा सा दिमाग लगाया और बच्चों ने अपना फोन खुद बना डाला वो भी मुफ्त में।

प्लास्टिक के गिलास जिन्हें लोग फेंक देते हैं और मोटे धागे की मद्द से बच्चों ने खुद अपना.अपना टेलीफोन बनाया जो न ही पोस्टपेड है और न ही प्रीपेड है और कमाल तो यह है कि इस फोन में इनकमिंग और आउटगोइंग दोनों लाइफ टाइम मुफ्त हैं। फिर क्या है, 24 घण्टों लगे रहो अपने फोन पर, अपने दोस्तों के साथ। पर दोस्तों, ये बात जरूर ध्यान में रखें कि हम पुराने गिलासों से ही बनाएं, नए गिलास न खरीदें

क्योंकि इससे जुगाड़ नहीं होगा कबाड़ ही बढ़ेगा।

चलने वाले खिलौने

देख मेरा कछुआ तेरे शेर से जीत गया. . . अरे मेरी बिल्ली ने दौड़ में कुत्ते को भी पीछे छोड़ दिया . . .

बच्चों ने धागे की सड़क पर दौड़ने वाले तरह.तरह के जानवर और पक्षी बनाए और उनकी दौड़ लगवायी। कभी कछुआ जीता तो कभी चूहा और कभी तोता बाजी मार गया। गत्ते के छोटे टुकड़े पर बच्चों ने अपने मनपसंद जानवरों के चित्र बनाए और फिर स्ट्रा के छोटे टुकड़ों और मोटे धागे की मद्द से बनाया एक मजेदार खिलौना। इस खिलौने के साथ बच्चे खूब खेले।

मेरा मन करता है

मेरा मन करता है कि मैं बहुत पढ़ूँ। मेरा मन करता हैं कि मैं डॉक्टर बनूँ। मेरा मन करता है कि मेरी मम्मी की बहुत सेवा करूँ। मेरा मन करता है कि मैं बड़ो का कहना मानूँ। मेरा मन करता हे कि मेरा हर एक दिन अच्छा जाए। मेरा मन करता है कि मैं कभी गुस्सा नहीं करूँ। मेरा मन करता है कि मैं अपनी मम्मी का नाम रोशन करूँ। मेरा मन करता है कि मैं अमेरिका घूमना चाहती हूँ।

तुलसा मेहरा

हीरा

मेरा मन करता है कि मैं पेप्सी की गाड़ी खाली करूँ और फिर उसको भरूँ, उससे ज़्यादा पैसे मिलेंगे। मेरा मन करता है कि मैं पढ़ता रहूँ जब तक कि मैं 12वीं की परीक्षा दे दूँगा तो फिर मैं भले ही स्कूल छोड़ दूँ। मेरा मन करता है कि कुछ अच्छा काम करूँ। मुझे शिक्षा प्राप्त करने वाला काम अच्छा लगता है। मेरा डांस इण्डिया में नाचने का मन करता है। मेरा मन करता है कि मैं मुम्बई जाऊँ। मेरा मन करता है कि मैं एक बाईक खरीदूँ। मेरा रितिक रोशन से मिलने का मन होता है। मेरा मन करता है कि एक डीजे होता तो मेरे भाई की शादी में बजाता। मेरा भाई कितना खुश होता। मेरा मन करता है कि दिन भर कुछ काम, कुछ खेल, कुछ पढ़ता। मेरा मन करता है कि मेरी माँ की हर बात को समझूँ। मुझे माँ–बाप अच्छे लगते हैं।

पप्पू, गौतम नगर

मेरा मन करता है कि मैं खूब पढ़ाई करूँ। मैं एक अच्छी टीचर बनूँ। मैं खूब दूर घूमने जाऊँ, आगरा देखने जाने का मन करता है। साईकिल चलाने का मन करता है। खूब सारी आईसक्रीम खाने का मन करता है। झूला झूलने का मन करता है। कोई जल्दी उठा दे तो उस पर गुस्सा करने का मन करता है।

सिमरन

राजकुमारी

मेरा पढ़ाई करने का मन करता है मगर मैं पढ़ नहीं पाती क्योंकि मेरा दिल नहीं लगता। मेरा मन होता है नए कपड़े पहनने का। खेलने का मन करता है। मुझे नाचना अच्छा लगता है।

शारदा

मेरा मन करता है कि मैं स्कूल में पढ़ूँ। मेरा मन करता है कि मैं अच्छे कपड़े पहनँू। मेरा मन करता है कि मैं अंग्रजी बोलूँ। मेरा मन करता हे कि मैं घूमने जाऊँ। मेरा मन करता हे कि मैं टीचर बनूँ और मेरा मन करता है कि मैं तैयार होकर जाऊँ। मेरा मन करता है कि अपने मम्मी ओर पापा के काम में हाथ बटाऊँ।

दीपा वर्मा

शिवानी

मेरा मन करता है कि टीचर बनते तो कितना अच्छा होता और हमारी बस्ती अच्छी होती तो कितना अच्छा होता और मेरे पापा दारू पीते हैं तो मुझे अच्छा नहीं लगता है। जब मेरे पापा दारू नहीं पीते तो मुझे अच्छा लगता है।

शहनाज़

''ऐ लड़की अंदर मत आ, हम सब शेर हैं, बिल्ली नॉट एलाऊड''

मुखौटे बनाना

हमने बच्चों को चार तरह के मुखौटे बनाना सिखाया जिसमें शेर, खरगोश, चूहा व उल्लू थे। अधिकतर बच्चों को शेर का मुखौटा बहुत पसंद आया।

हम सब शेर बनाएंगे क्योंकि हम शेर हैं।

दीदी, मैं तो उल्लू का मुखौटा बनाऊँगा क्योंकि मुझे उल्लू पसंद है।

अरे दीदी, मैंने अपने उल्लू के मुखौटे से उस लड़की को डरा दिया वो रोने लगी। अब तो मैं घर जाकर सबको, छोटे बच्चों को डराऊँगा।

दीदी हम तो पहली बार ही मुखौटा बना रहे हैं। बहुत मजा आ रहा है।

अरे मुझसे तो नहीं बन पाएगा।

अरे यार रुक, मैं तुझे सिखाता हूँ।

देख मेरा बन गया।

पत्तियों का जादू

अजय

गुडडी

शिवानी

बिदिया

विनम

अब आई मम्मियों की बारी!

ये पन्ना तुम्हारा

यहाँ अपना कुछ लिखो, बनाओ या चिपकाओ

किशन

बाल मेले का यह आयोजन, कई मित्रों के सहयोग से और मुस्कान के सभी साथियों के साझे प्रयास से संभव हो सकाः

गतिविधियों के स्रोत व्यक्ति		
विज्ञान	:	सचिन, माया
मुखौटे	:	नीतू, तारा
लेखन	:	ब्रजेश, प्रेरणा
कबाड़ से जुगाड	:	ताहिर, मुंशी
सामूहिक चित्रण	:	निशा, शशि
इतिहास	:	शिवानी, ममता
पत्तियों का जादू	:	गोकुल, हंसा
फिल्म शो	:	सविता, प्रीमा
पेरेन्ट्स एवं पालक चर्चा	:	मोना, रीना, पिंकी
समूहों के साथ	:	लक्ष्मी, सुमित्रा, अनिता, रेखा, बबिता, रोइन, निशा,आजी
व्यवस्था	:	जितेन्द्र, सुनीता
मेला स्थल हेतु सहयोग	:	शासकीय प्राथमिक शाला, दीपशिखा (जन शिक्षा केन्द्र), भोपाल।
प्रतिभागी शालाएं	:	दीपशिखा, गांधी बाल मंदिर, सम्राट अशोक, सरदार पटेल
फोटो	:	दीपक, महीन
कवर डिज़ाइन	:	कनक
कवर चित्र	:	टें-टें समूह
प्रकाशन	:	प्रीति, मधु, नीलम, सीमा, सुजाता, दीपक, रिनचिन, महीन
वित्तीय सहयोग	:	सर रतन टाटा ट्रस्ट

मुद्रक – आदर्श प्रा. लि. एम.पी.नगर, भोपाल